भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष-14, अंक-4 शुक्रवार, 26 अप्रैल' 91	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी अप्रैल, 1991	वार्षिक चन्दा-10.00 प्रति अंक : 1.00

ब्रह्मप्रवाह

जिसने मन सौंप दिया हो उसे जैसी हो वैसी सच-सच बात कही जा सकती है। वैसे बड़े पुरुष हमारे ठहराव (हमारी सोच) और रुचि के मुताबिक ही कहते हैं और जब मन सौंप दिया जाये तब ही जैसा है वैसा रहस्य समझाते हैं और स्वयं की अनुवृत्ति के मुताबिक हमें वर्ताते हैं।

मन **जोड़ा** हो तो कई और जगह भी सांधे हो, पर अगर मन गुरुचरणों में **अर्पण कर दे**, तो जीव दूसरी ही प्रकार का हो जाता है।

इसलिये, बड़ों के प्रसंग व सेवा से—कोई प्रीति से, विश्वास से, समझदारी से या कृपा से आत्मबुद्धि व प्रीति दृढ़ करे व निर्दोषभाव सत्संग में आये वही मन अर्पण करने का फल मिला जानना।

बाद में, अक्षरधाम का सुख, शांति और आनंद देह रहते हुए अनुभव होता है व प्राप्त होता है।

गुरुकृपा से ऐसा प्रगट ब्रह्म का मनन द्वारा प्रसंग करने का सबको बल मिले यही अभ्यर्थना (प्रार्थना)

1968

प.पू. काकाजी महाराज

जब होवत हरिकृपा तब मिलत हैं सच्चे संत

समग्र गुणातीत समाज के लिए महामंगलकारी आनंदकारी दिन नजदीक आ रहा है...4 मई..... गुणातीतसमाज के प्राणपुरुष–आर्षदृष्टा पुरुष–गुरुहरि प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की जन्मजयंती..... अर्थात् भक्ति अदा करके स्वयं को धन्य करने का अद्‌भुत अवसर.....पधारो ! हम सब मिलकर गुरुहरि के चरणों में अपनी भावना के पुष्प अर्पित करें व उनकी मर्जी के मुताबिक जीने का दृढ़ संकल्प करके कृतनिश्चयी बने....

दो सौ साल के करुणानिधि भगवान श्री स्वामिनारायण ने संबंध में आये हरेक पर उसकी काबलियत, बुद्धि, शक्ति, स्वभाव, जाति-पाँति कुछ भी देखे बिना बस मौज में अक्षरधाम बक्षीश देने का सत्य संकल्प करके केवल करुणा की अनुपम बौछार कर दी.....कोटि-कोटि धन्यवाद हो महाप्रभु को ! साथ में ही सेवकभाव व सुहृद्‌भाव की अजोड़ सूझ देने साकार ब्रह्म मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी को भी लाये....जिन्होंने मानवजाति को सनाथ तो किया ही, साथ ही प्रभु के सिवा कोई व्यक्ति, कोई शक्ति, कोई संकल्प, कोई क्रिया, कोई भाव हावी हो न पाये, वैसा जीवन स्वयं जीकर पृथ्वी को अखंडित ज्योतिर्मयी रखा। समर्थ होते हुए भी दासत्वभाव स्वप्न में भी न भूल पाये–वह कैसी अजोड़ साधुता ! किस तरह जीव अपने संकुचित दायरों, इन्द्रियाँ अंतःकरण के कलुषित भावों से निकलकर प्रभु के बल से देह रहते हुए प्रभु की मूर्ति का सच्चा सुख-आनंद प्राप्त कर सके–बस जीव के आत्यंतिक कल्याण की यही निरपेक्ष परम हितकारी भावना से आज भी उसी परम्परा के वारिसदार सर्व गुणातीत स्वरूपों संबंध में आए हरेक चैतन्य के विकास के लिए अविरत परिश्रम कर रहे हैं।

आज प.पू. स्वामिजी के परिश्रम को हम सभी निहार सकते हैं....स्वयं की देह, दिन-रात का आकार देखे बिना देश-विदेश में श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की प्रगट की शुद्ध उपासना का डंका मारकर गुरुहरि योगीजी महाराज के प्रति की गुरुभक्ति का ऋण अदा करने की एकमात्र चाहना से लगे हुए हैं। केवल संबंध से निर्गुण भाव बक्षिश में देकर, आधि-व्याधि-उपाधि तीनों ताप को बुझाकर, सुख शांति आनंद व बल देने वाली इस विरल विभूति को हमारी सीमित बुद्धि व मायिक दृष्टि क्या पहचान पाएगी?

अहो हो ! कैसी सर्वोपरि प्राप्ति ! स्वयं प्रभु गरजु बने–

- वह ही हमारी चिंता रखे,
- वह ही हमारे सब पाप अपने सर ले ले,
- वह ही हमारे सुखों में नहीं, बल्कि दुःखों में साझेदार बने,
- वह हमारी चेतना के विकास के लिए परिश्रम करे,
- वह ही हमारी बाहरी व आंतरिक संभाल रखे,
- वह ही हमारे लिए भजन करे, हमें मन बुद्धि से निकलने का बल देवे,
  वह ही हमसे प्रीति करे,
- वह ही हमारी कक्षा पर आकर हममें रसबस होवे,
- वह ही हमारे आगे-पीछे रहकर सदा हर प्रकार के देशकाल से हमारी रक्षा करे,
- वह ही हमारे इस लोक की व परलोक का जिम्मा ले,
- वह ही माया के जड़बंधनों से ऊपर उठाकर हमें सच्चे आत्मिक सुख की प्रतीति करावे–

क्या ऐसे साधु जो निरपेक्ष भाव से केवल हमारा हित ही चाहे–वह इस धरती पर मिल सकते हैं? पर हममें से जो भी प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामी, प.पू. साहेब के संबंध में आया होगा–वह जरूर ऊपर लिखी सभी बातों के लिए डंके की चोट पर कह सकेगा कि हां मेरे गुरु ने यह सभी कुछ मेरे लिए किया है–बाहरी

दृष्टी से तो हम कभी भी इन स्वरूपों के जीवन को सम्यक् पहचान नहीं पाएंगे.....हाँ, अंतरचक्षु से अगर निहारने की सुरुचि रखेंगे तो बड़े पुरुष करुणा करके जरूर हमें अनुभव करा देंगे।

प.पू. स्वामिजी की जयंती मनाना, भक्ति अदा करना सही अर्थ में वही माना जाएगा कि जो इन्हें खूब जँचता है, जो उन्हें हमारे पास कराने की चाह है वह हम करने दृढ़ संकल्प होवें–प्रसंग, देशकाल हमारे निश्चय में डगमगाहट न करा सके–हमारी मन, बुद्धि जो आपके साथ हमारा दृढ़ संबंध नहीं होने देती, आप में ही मनुष्यभाव तो नहीं पर मायिकभाव दिलवाती है....उस मन बुद्धि को आप ही करुणा करके ऐसी दिव्यता में परिवर्तित कर दो ताकि वह दुःखदायी न हो बल्कि सुखदायी–अरे ! प.पू. काकाजी के शब्दों में परम सुखदायी बनें– आपकी इस अनहद् करुणा को हम अब समझें और झेलें–यही इस पवित्र अवसर पर जरूर आशीष बरसाना !!!

□ □ □

जन्म-कर्म च मे दिव्यं—

सन् 1959 में एक बार दोपहर को ठाकुरजी को थाल लगाने के बाद गुरुहरि योगीजी महाराज ने वचनामृत वर. 11 समझाते हुए पूछा : 'आत्मबुद्धि अधिक है या प्रीति?'

फिर उसका उत्तर स्वयं ही देते हुए बोलेः 'घर के पाँच व्यक्ति साथ में आत्मबुद्धि से इकट्ठे रहते हों, पर अगर आपस में कुछ कहा-सुनी हो जाए तो दरार पड़ जाती है परन्तु अगर दृढ़ प्रीति हो तो वह होगी नहीं (क्योंक प्रीति में एक-दूसरे के बिना रहा ही नहीं जाता) इसलिए गोपियों जैसी प्रीति करना अधिक है। प्रीति क्या? **प्रियतम की मर्जी को टाल ही न पाए।** फिर आगे बोले यहाँ तो मन के विरुद्ध थोड़ी सी आज्ञा करने पर उदासी आ जाती है, वह नहीं आनी चाहिए बल्कि श्रद्धा से सेवा करनी चाहिए।'

गुरुहरि योगीजी महाराज ने कितना सहज सरल उपाय बताया कि भगवान रखे संत के साथ ही हम ऐसी दृढ़ प्रीति कर लें कि उसकी आँख से उसकी मर्जी का, अभिप्राय का पता चल जाए कि मेरे प्रियतम को क्या पसंद है? इना ही नहीं स्वप्न में भी यह ख्याल रहे कि मेरी इस क्रिया से, विचार से मेरे प्रभु राजी नहीं होंगे, सो मुझे यह नहीं करना.....मेरे प्रभु हर पल मुझे देख रहे हैं.....उसे ही बोला जाता है दृढ़ प्रीति उसी को बोला जाता है....दृढ़ लगाव।

और उसकी तरफ से कोई भी आज्ञा आवे तब भी–

–चाहे वह हमारे दिमाग की–अरे ! दिल की तराजू में फिट न बैठे,

–चाहे मन कितना भी उखड़ा हो,

–चाहे शरीर थक कर कितना भी चूर-चूर हुआ हो,

–चाहे आन्तरिक व बाहरी संजोग भी खूब विपरीत हो।

जो सेवक अहोभाव से वह आज्ञा पाल लेने की सुरुचि मात्र भी रखे तो गुणातीत स्वरूपों अंतर से राजी होकर उसे न टले ऐसे प्रारब्ध व जड़ प्रकृति स्वभाव के बंधनों से मुक्ति दिलाकर देह रहते हुए अक्षरधाम के सुख शांति, आनंद का भोक्ता बना देते हैं।

स्वामी की बातें

181. ...विपरीत देशकाल आता है तब भगवान याद नहीं आते और उद्वेग (बेचैनी) होता है उसका क्या समझना? स्वामी ने उत्तर दिया कि भगवान सर्वकर्ता हैं; कठिन देशकाल में तो किसी को भगवान याद आये ही नहीं, पर इस लोक में तो चिपक न पायें। और इस लोक से वैराग्य हो जाये व चिपका नहीं जाये इसलिए भगवान ने उसे दुःखी रखा है; सो सर्वकर्ता भगवान को समझना।

प्र-4,48

182. .....जिस समय जिसके हाथों कल्याण करने का भगवान ने सौंपा हो उससे कल्याण होता है। जैसे परीक्षित को शाप हुआ तब व्यासजी आदि कई खूब बड़े थे पर शुकजी आये तभी कल्याण हुआ। प्र-4, 49

183. यह साधु मनुष्य जैसा दिखाई पड़ता है, पर मनुष्य जैसा नहीं है और आज तो प्रगट भगवान हैं, प्रगट साधु है, प्रगट धर्म है और इस समय में जिसने नहीं पहचाना उसे बाद में सर कूटना पड़ेगा अर्थात् पछताना पड़ेगा।

प्र-4,50

184. पापी का संग लग जाये तो साठ हजार साल का पुण्य चला जाये और इस साधु का संग लग जाए तो साठ हजार साल का पाप जल जाये और पुण्य हो।

प्र-4,51

卐 卐 卐

व्रतोत्सवसूची

1.	दि.	28.4.91	मंगलवार	पूर्णिमा
2.	दि.	04.5.91	बुधवार	प्र. ब्र.स्व.प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की जन्मजयंती
3.	दि.	10.5.91	गुरुवार	एकादशी, व्रत
4.	दि.	17.5.91	मंगलवार	गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज की अंतर्धान तिथि
5.	दि.	24.5.91	रविवार	एकादशी, व्रत
6.	दि.	03.6.91	मंगलवार	ब्र.स्व. योगीजी महाराज की जन्मजयंती

PUBLISHED BY SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY,
A 103, Ashok vihar-III, Swaminarayan Marg, Kakaji Lane,
Delhi-110 052. (India) Tel. : 7229327, 7128838
Printed at **R.P. Printers**, Shahadra, Delhi-110032